बृहस्पतिवार व्रत कथा PDF

प्राचीन काल में एक ब्राह्मण रहता था, वह बहुत गरीब था। उसके कोई संतान नहीं थी। उसकी पत्नी बहुत ही गन्दगी से रहती थी। उसने स्नान नहीं किया, किसी देवता की पूजा नहीं की, इससे ब्राह्मण देवता बहुत दुखी हुए। बेचारी बहुत कुछ कहती थी पर उसका कोई नतीजा नहीं निकलता था।

भगवान की कृपा से एक ब्राह्मण की पत्नी के यहां पुत्री रूपी मणि का जन्म हुआ। जब कन्या बड़ी हुई तो वह प्रातः स्नान करके भगवान विष्णु का जप करने लगी और बृहस्पतिवार का व्रत करने लगी। जब वह पूजा समाप्त कर स्कूल जाती थी तो मुट्ठी में जौ लेकर स्कूल जाने के रास्ते में रख देती थी। फिर लौटते समय वह सोने का जौ तोड़कर घर ले आती।

एक दिन वह कन्या उस सोने के जौ को सूप में कूट–कूट कर साफ कर रही थी कि उसके पिता ने देख लिया और कहा– हे पुत्री! सोने का जौ चाहिए तो उसके लिए सोने का सूप होना आवश्यक है। दूसरे दिन वृहस्पतिवार था, इस कन्या ने व्रत रखा और बृहस्पतिदेव से प्रार्थना की और कहा– यदि मैंने सच्चे मन से आपकी पूजा की है, तो मुझे सोने का सूप दीजिए। बृहस्पतिदेव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। वह कन्या प्रतिदिन की भाँति जौ बिखेरने लगी, जब वह लौटकर जौ चुन रही थी तो बृहस्पति देव की कृपा से उसे सोने का सूप मिला।

तब वह उसे घर ले आई और और उसमें जौ साफ करने लगी उसके बाद भी उसकी मां का तरीका वही था एक बार की बात है एक अन्य वह कन्या सोने के सूप में जौ साफ कर रही थी। उसी समय उस नगर का राजकुमार वहां से गुजरा। वह उस कन्या के रूप और कार्य को देखकर मोहित हो गया और अपने घर आकर अन्न–जल त्याग कर उदास होकर लेट गया। जब राजा को इस बात का पता चला तो वह अपने प्रधान मंत्री सहित उसके पास गया और बोला– हे पुत्र, तुझे क्या परेशानी है?

यदि किसी ने आपका अपमान किया हो या कोई अन्य कारण हो तो कहें कि मैं वही करूंगा जो आपको भाता है। जब राजकुमार ने अपने पिता की बात सुनी तो उसने कहा – आपकी कृपा से मुझे किसी बात का खेद नहीं है, किसी ने मेरा अपमान नहीं किया है, लेकिन मैं उस लड़की से शादी करना चाहता हूं जो जो उस समय सोने के सूप में जौ साफ

pdfinox.com

कर रही थी। राजा यह सुनकर चकित हो गया और बोला– हे पुत्र! ऐसी लड़की को आप खुद ढूंढिए। मैं निश्चित रूप से उससे तुम्हारा विवाह करवा दूंगा। राजकुमार ने उस लड़की के घर का पता बता दिया।

तब मंत्री उस कन्या के घर गया और सारी स्थिति ब्राह्मण देवता को कह सुनाई। ब्राह्मण देवता अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार के साथ करने के लिए तैयार हो गए और उसके बाद पूर्ण विधि विधान के अनुसार ब्राह्मण ने अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया। कन्या के घर से निकलते ही उस ब्राह्मण देवता के घर में पहले की तरह दरिद्रता का वास हो गया। अब तो खाने के लिए भी खाना मिलना बहुत मुश्किल हो गया था।

एक दिन उदास होकर ब्राह्मण देवता अपनी पुत्री के पास गए। बेटी ने पिता की दुर्दशा देखी और मां का हालचाल पूछा। तब ब्राह्मण ने सारा हाल कह सुनाया। लड़की ने ढेर सारा पैसा देकर अपने पिता को विदा किया। इस प्रकार ब्राह्मण का कुछ समय सुखपूर्वक व्यतीत हुआ। कुछ दिनों बाद फिर वही स्थिति हो गई। ब्राह्मण फिर अपनी कन्या के यहां गया और सारा हाल पूछा तो कन्या बोली– हे पिता जी! तुम माँ को यहाँ ले आओ। मैं उसे वह उपाय बताऊँगा जिससे दरिद्रता दूर होगी।

जब वह ब्राह्मण देवता अपनी पत्नी के साथ पहुंचे तो वह अपनी माता को समझाने लगी– हे माता, तुम प्रातःकाल प्रथम स्नान करके भगवान विष्णु की पूजा करो, तब सारी दरिद्रता दूर हो जाएगी। लेकिन उनकी एक भी मांग नहीं मानी और सुबह जल्दी उठकर अपनी बेटी के बच्चों का जूठा खा लिया। इससे उनकी बेटी को बहुत गुस्सा आया और एक रात उसने अलमारी से सारा सामान निकाल कर अपनी मां को उसमें बंद कर दिया।

जब उसे प्रातःकाल निकालकर स्नानादि कराकर पाठ करवाया तो उसकी माता की बुद्धि ठीक हो गई और वह प्रति गुरुवार व्रत करने लगी। इस व्रत के प्रभाव से उसके माता–पिता अत्यंत धनवान हुए और उन्हें पुत्रों की प्राप्ति हुई तथा बृहस्पतिजी के प्रभाव से वे इस संसार के सुखों को भोगकर स्वर्ग को प्राप्त हुए।

pdfinbox.com